जुए की लत

जुए की बात चली तो युधिष्ठिर का नाम आएगा ही और युधिष्ठिर का नाम आते ही आपको द्रौपदी भी याद आएगी। ऐसी क्या बात थी कि धन सम्पत्ति के बाद पत्नी को भी दांव लगा दिया गया? जिद, घमण्ड या और कुछ? जर्मनी के शोधकर्ताओं ने अब इस तरह की आदतों का कुछ खुलासा किया है। उनका कहना है कि अगर आप सट्टे, जुए में हाथ आज़माते हैं तो आप चेत जाइए। क्योंकि, आप इसके लती हो सकते हैं। वैसे ही जैसे धूम्रपान, शराब और अन्य नशीली दवाओं के लती हो सकते हैं। यानी युधिष्ठिर भी....।

यह विवादास्पद दावा है जर्मनी के शोधकर्ताओं का जिन्होंने ब्लैकजैक खेलने वाले आदमियों के हॉर्मोन के स्तर पर शोध किया। अब तक माना जाता रहा था कि कोई व्यवहार शारीरिक लत का रूप अख्तियार नहीं कर सकता है।

नॉटिंघम ट्रेंट विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिक मार्क ग्रिफिथ्स का कहना है ''कुछ लोग कहते हैं कि आप व्यसनी तभी बन सकते हैं जब आपने कोई पदार्थ ग्रहण किया हो।'' लेकिन मेरा कहना है कि अगर सट्टेबाज़ी बहुत हद तक की जाए तो वह भी व्यसन का रूप ले सकती है। ग्रिफिथ्स का कहना है कि कम्प्यूटर गेम, संभोग, यहां तक की बागवानी भी व्यसन के दायरे में आ सकते हैं।

ब्रेमेन विश्वविद्यालय के गेरहार्ड मेयर और उनके साथियों ने एक जुआघर से 10 जुआरियों को चुना और उन्हें अपने पैसों को दांव पर लगाकर ब्लैकजैक खेलने को कहा। जुआ खेलने के दौरान मेयर ने उनके हृदय की धड़कन, तनाव के दौरान उनकी लार में बनने वाला हॉर्मोन कॉर्टिसोल का स्तर मापा। फिर उसने इन्हें पैसों की बजाए प्वाइंट के लिए खेलने को कहा। ऐसा इसलिए कि वह इस समूह को नियंत्रक के बतौर रखना चाहता था। मेयर ने पाया कि जब जुआरी पैसों के लिए खेल रहे थे तो उनकी हृदय गति और कॉर्टिसोल का घनत्व दोनों काफी ज़्यादा था। हालांकि वे यह भी स्वीकार करते हैं कि अभी तक उन्हें कोई निश्चित प्रमाण नहीं मिला है कि जुआ व्यसन है। दरअसल उनके द्वारा यह दर्शाया जाना बाकी है कि कॉर्टिसोल का बढ़ा हुआ स्तर

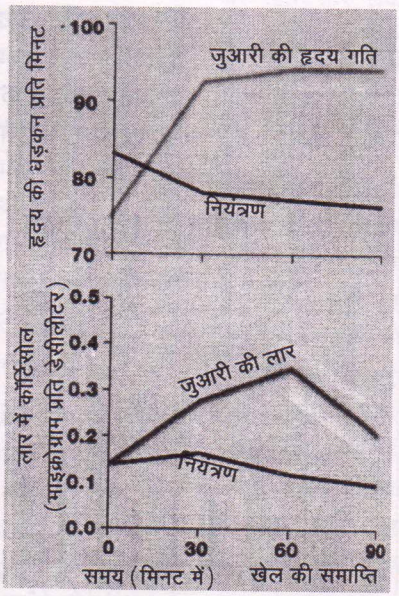

डोपामाइन जैसे मुख्य रसायनों के स्तर को बढ़ा देता है। लेकिन वे कहते हैं कि यह इस ओर बढ़ा एक कदम है।

जुआरियों का कहना है कि जब-जब वे दांव लगाते हैं उन्हें सुखद अनुभूति होती है। उनके अंदर एक हिलोर-सी उठती है। कुछ ऐसे ही अनुभव नशीली दवाएं सेवन करने के बाद होते हैं। ऐसा दरअसल दिमाग में डोपामाइन व सिरटोनिन जैसे न्यूरो ट्रांसमीटर्स के उत्सर्जन के कारण होता है। व्यसन के पीछे भी यही सिद्धान्त है कि अगर आप किसी नशीले पदार्थ का सेवन करते हैं तो सामान्य से कहीं ज़्यादा डोपामाइन छोड़ा जाता है। जब लोग जुआ खेलते हैं तो उनका कहना है कि उन्हें भी ऐसी ही इच्छा करती है।

मेयर तो इस बात तक की सम्भावना टटोलते हैं कि इस नई खोज के आधार पर उन लोगों की सज़ा में कटौती भी हो सकती है जिन्होंने कोई अपराध कर दिया हो। अगर वकील सिद्ध कर पाते हैं कि उनके अपीलकर्ता ने वह अपराध शारीरिक कमी के कारण किया है न कि कोई तयशुदा नीति के तहत, तो सज़ा काफी कम हो सकती है।

इसके बाद मेयर खून में तनाव वाले हॉर्मोन एड्रीनेलीन को मापेंगे। वैसे देखा जाए तो सबसे पुख्ता प्रमाण दिमाग में न्यूरोट्रांसमीटर के मापन से होगा।लेकिन एक जुआघर में इस तरह का काम बिल्कुल असम्भव है, यह भी वे कहते हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***